मीडिया समन्वय कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 14 फरवरी

अन्य ग्रहों पर हो सकता है जीवन : विख्यात वैज्ञानिक नार्लिकर

पद्म विभूषण से सम्मानित विश्वविख्यात खगोल भौतिकविद श्री जयंत वी नार्लिकर का मानना है कि हमारी पृथ्वी के बाहर किन्हीं नक्षत्रों पर हमसे भी अधिक विकसित सभ्यताएं हो सकती **हैं।** लेकिन वहां तक पंहुचने में वर्तमान वैज्ञानिक विकास के हिसाब से कम से कम 10 लाख साल का समय लगेगा, जो फिलहाल संभव नहीं है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया : जेएमआई : में हाल में शुरू किए गए '' बहु विषयक अग्रगामी अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र '' : एमसीएआरएस : के विशेषज्ञ व्याख्यानों का शुभारंभ करते हुए श्री नार्लिकर ने अपने अनुसंधानों के आधार पर यह बात कही।

श्री नार्लिकर ने कहा, '' इस बात के पारिस्थितिकीय साक्ष्य हैं कि जो जीवन के डीएनए पृथ्वी पर हैं, वे अंतरिक्ष में भी पाए जाते हैं। सूर्य वाले अन्य नक्षत्रों में जीवन हो सकते हैं। पर अभी से कुछ कहना जल्दबाज़ी होगी। ''

मानव की चहुं मुखी, खासकर वैज्ञानिक तरक्की पर संतोष जताने के साथ ही उन्होंने आगाह किया कि तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान जहां इंसान को लगातार अधिक बुद्धिमान बनाता जा रहा है लेकिन साथ ही यह ज्ञान जीवन के विनाश को भी खतरा पैदा कर रहा है। उनका इशारा परमाणु बम के बारे में था।

अध्यापकों, छात्रों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की भारी उपस्थिति के बीच श्री नार्लिकर ने जेएमआई के अंसारी सभागार में कहा कि किसी दूसरे सूर्य के नक्षत्र में जीवन तलाशने के प्रयास जारी हैं। ऐसी संभावित सभ्यताओं को पृथ्वी से संकेत भी दिए जा रहे हैं। उपस्थित लोगों की हंसी के बीच उन्होंने कहा कि हो सकता है

दूसरे ग्रहों से किसी विकसित सभ्यता के लोग कभी प्थ्वी पर आ भी जाएं। लेकिन खतरा यह भी है कि उन्हें पृथ्वी पसंद आ जाए और वे '' हम मानवों से कहें कि आप लोग यहां से चलते बनें और हम यहां बसेंगे। '' उन्होंने आशंका जताई कि अन्य ग्रहों की संभावित सभ्यताएं पृथ्वी के मानवों को खत्म भी कर सकती **हैं।**

बहु विषयक अग्रगामी अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र खोलने की पहल करने वाले जेएमआई के कुलपति प्रो तलत अहमद ने इस बात पर खुशी ज़ाहिर की कि विश्व के इतने विख्यात वैज्ञानिक ने विश्वविद्यालय के महत्वकांक्षी एमसीएआरएस में पहला व्याख्यान दिया।

प्रो अहमद ने कहा कि आज विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में आपसी संबंध बढ़ता जा रहा है और ऐसे में बहु विषयक प्लेटफार्म की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। उन्होंने कहा कि इस आवश्यकता को देखते हुए जेएमआई ने एमसीएआरएस विभाग खोला है।

उन्होंने बताया कि इस विभाग को जेएमआई या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से कोई धन लेने की जरूरत नहीं होगी, बल्कि बाहर से यहां आने वाले अनुसंधानकर्ता और वैज्ञानिक इसे उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने बताया कि ऐसे लोग तीन करोड़ रूपयों की व्यवस्था पहले ही कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि जेएमआई बाहर से आने वाले इन वैज्ञानिकों को केवल विश्वविद्यालय की जगह और प्रयोगशालाएं उपलब्ध कराएगा।

उपस्थित लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच प्रो अहमद ने बताया कि सिंगापुर, अमेरिका और ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों से 6 विख्यात वैज्ञानिक पहले ही जामिया के एमसीएआरएस से जुड़ चुके हैं।

उन्होंने कहा कि विदेश से आने वाले इन अनुभवी वैज्ञानिकों की उपस्थिति से जेएमआई के छात्रों को ही नहीं बल्कि अध्यापकों को भी काफी लाभ मिलेगा और एक '' सकारात्मक प्रतिस्पर्धा '' की शुरूआत होगी।

विभाग के प्रमुख सुशांत घोष इस अनूठी योजना के लिए प्रो अहमद का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि जेएमआई में अनुसंधान को मजबूती प्रदान करने के लिए कुलपति ने इस दूरगामी योजना की शुरूआत की है। उन्होंने बताया कि विज्ञान के नवीनतम ज्ञान का लाभ उठाने के लिए विभाग में समय समय पर विश्वविख्यात वैज्ञानिक आते रहने की कुलपति ने व्यवस्था की है।

उन्होंने कहा कि प्रो अहमद ने जेएमआई अनुसंधान का स्तर बढ़ाने और विश्वविद्यालय को वैश्विक अनुसंधान से जोड़ने के लिए इस विभाग को खोलने की बड़ी पहल की है।

कार्यक्रम में अन्य लोगों के अलावा कुलपति के ओएसडी प्रो शरफुददीन अहमद, सैद्धांतिक भौतिकशास्त्र विभाग के प्रमुख प्रो समी, डीन छात्र कल्याण प्रो तसनीम मिनाई और अन्य विभागों के प्रमुख, डीन और बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित थे।

प्रो साईमा सईद
डिप्टी मिडिया कोआरडिनेटर
मोबाईल 9891227771